Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852; Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 02-05-2020; Accepted: 15-05-2020; Published: 03-06-2020
Volume 1; Issue 1; 2020; Page No. 44-45

ग्रामीण पर्यटन के विकास में सहायक मालवा की लोककला संजा एवं मांडने

Chetna Thakur
PDF Research, Fellow Govt K.P College Dewas, Madhya Pradesh, India

सारांश

भारत की यदि हम बात करें तो असली भारत के दर्शन हमें गांव में ही होते हैं। मध्य प्रदेश ऐसे ही ग्रामीण संस्कृति के परिचायक देश में एक समृद्ध विविध संस्कृति वाला राज्य है। मध्यप्रदेश अपनी ग्रामीण जनजातीय जनसंख्या के लिए भारत में प्रथम स्थान रखता है। यहां की संस्कृति विभिन्नता में एकता के दर्शन करवाती है। साथ ही इस प्रदेश को अपनी भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं के कारण एवं भारत के मध्य में स्थित होने के कारण भारत के ह्रदय स्थल के रूप में दर्जा प्राप्त है, जो अक्सर देशी–विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना रहता है। मध्यप्रदेश विभिन्न संस्कृतियों का संगम स्थल है। प्रदेश की नैसर्गिक सुंदरता की तरह यहां की कला और संस्कृति भी बहुआयामी है । यहां की लोक–कला और संस्कृति के क्षेत्र में स्थानीय कला में चित्रांकन की परंपरा भित्ति चित्रों और भूमि अलंकरण के रूप में मिलती है। ये स्थानीय कला मे चित्रांकन परंपरा पर्यटकों के लिए विशेष जिज्ञासा एवं आकर्षण उत्पन्न करती है। मध्यप्रदेश में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावना विद्यमान है जिसमें यहां की स्थानीय लोक–कला का भी महत्वपूर्ण स्थान है। मैने अपने शोध पत्र के माध्यम से यह उजागर करने का प्रयास किया कि किस प्रकार मालवा की स्थानीय लोक कला संजा और मांडने ग्रामीण पर्यटन के विकास का आधार बन सकती है।

मूल शब्दः भारत, लोककला, विकास, पर्यटन

प्रस्तावना

पर्यटन को विभिन्न प्रकारों में बांटा गया है और आज के वर्तमान दौर में ग्रामीण पर्यटन सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले पर्यटन की श्रेणी में आ गया है। ग्रामीण पर्यटन के तेज गति से विकसित होने का मुख्य कारण है शहरों में बढ़ता विभिन्न प्रकार का प्रदूषण, जनसंख्या वृद्धि, भीड़–भाड़, बढ़ता पाश्चात्य कल्चर आदि इन सबसे निजात पाने और सुकून और शांति की तलाश को पूरा करने का बहुत अच्छा विकल्प है ग्रामीण पर्यटन।

गांवों में पर्यटन के विकास के सभी प्रयास ग्रामीण जनता को विश्वास में लेकर ही किए जाने चाहिए। ग्रामवासियों में पर्यटन तथा पर्यटकों के प्रति जागरूकता पैदा करना आवश्यक है ताकि वे ''अतिथि देवो भवः'' की अपनी परंपरा के अनुरूप बाहर से आने वाले सैलानियों को आदर और सत्कार दे सकें। साथ ही स्मारकों के संरक्षण तथा स्वच्छ वातावरण बनाए रखने के बारे में चेतना पैदा की जानी चाहिए। स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत गांवों की इस सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक संपदा की साफ–सफाई को भी शामिल किया जा सकता है। स्वच्छता में सुधार के फलस्वरूप शहरी स्मारकों की तरह ग्रामीण स्मारक भी पर्यटकों को पहले से अधिक आकर्षित करेगें।

शहरों को गांवों से जोड़ने का यह अभिनव प्रयोग सरकार की ऊपर बताई गई दोनो नई योजनाओं की मदद से अधिक तीव्रता से सफल हो सकता है। इससे जहां एक ओर शहरों के अधिक विकसित होने के अहंकार पर अंकुश लगेगा, वही गांवों में अल्पविकसित रहने की हीन भावना दूर होगी। यही नगर और ग्राम के बीच समन्वय की कुंजी है। इस प्रकार ग्रमीण पर्यटन शहरों तथा गांवों के बीच पुल का काम करेगा जिससे दोनों के बीच विषमता और समरसता का संचार होगा और देश का संतुलित विकास हो सकेगा।

म.प्र. की 70 प्रतिशत जनता गांव में निवास करती है, और हमें म.प्र. के विकास के लिये ग्रामीण विकास पर अधिक बल देना होगा। इस दिशा में म.प्र. सरकार द्वारा अनेक प्रयास किये जा रहे है लेकिन उन कार्यक्रमों को सुचारू रूप से क्रियान्वयन की आवश्यकता है। साथ ही म.प्र. जनजातीय बाहूल्य प्रदेश के नाम से जाना जाता है और यहां जनजातीयों की अपनी कला और संस्कृति है, जिसे संरक्षण प्रदान कर उनके विकास की दिशा में योगदान दिया जा सकता है। मैने अपने शोध पत्र के माध्यम से मालवा की स्थानीय लोक कला संजा और मांडने ग्रामीण पर्यटन के विकास का आधार बन सकती है। इस पर प्रकाश डाला हैं।

संजा :– मध्यप्रदेश में मालवा की संस्कृति में बालिकाओं के लिए कला अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है संजा पर्व। मालवा अंचल में त्योहारों और लोक कलाओं का गहरा संबंध है। यह पर्व लोककला परंपरा में जीवित है। मोटे तौर पर इस लोकोत्सव के तीन महत्वपूर्ण अंग है। 1. अनुष्ठानिक आयोजन 2. भित्ति अलंकरण कला 3. लोकगीत पर्व।

कुंवारी कन्याओं का यह पर्व संजा कई प्रांतों में अलग–अलग नामों से जाना जाता है और पूजा जाता है। विभिन्न नामों से पुकारे जाने के कारण संजा का वास्तविक नाम किसी को नहीं पता। दरअसल संजा संस्कृत शब्द संध्या का तद्भव रूप है।[1] हिंदू पंचांग भादवा मास की पूर्णिमा से क्वार मास की सर्वपितृ अमावस्या तक पूरे 16 दिन यह कलात्मक पर्व मनाया जाता है।[2] इस पर्व में धर्म कला एवं लोकरंजन की अनूठी त्रिवेणी प्रवाहमान होती है। इस कलात्मक पर्व को कुंवारी कन्याएं ही मनाती है। विवाह हो जाने के बाद संजा बनाने वाली कन्या श्राद्ध पक्ष में पियर (पित्र ग्रह) आकर संजा को (उजमती) विसर्जन करती है। अर्थात विवाह उपरांत वह उत्सव सहित अंतिम पूजा करती है फिर अपनी सखी सहेलियां को भोजन करवाती है और फिर संजा पर्व मनाना उनके लिए आवश्यक नहीं रह जाता।[3]

संजा पर्व के महत्व का निर्धारण हम मनोरंजन और शैक्षणिक आधार पर कर सकते हैं संजा पर्व में बालिकाओं की मस्ती, उमंग, आनंद, उत्साह और आमोद प्रमोद का चरमोत्कर्ष देखा जाता है। ग्रामीण जनों का यही उत्साह व आनंद पर्यटकों के आकर्षण व जिज्ञासा का माध्यम बनता है। पर्यटक अभी तक जो ग्रामीण संस्कृति से अछूता रहता था पर्यटन के दौरान धीरे–धीरे यहां के पर्व, त्यौहार, खानपान, स्थानीय लोक–कला आदि से रूबरू होने पर उसकी सरलता सौम्यता में रमता चला जाता है जो कि उसे अलौकिक एहसास दिलाता है। पर्यटक जब गांव का चयन ग्रामीण पर्यटन के दौरान करता है तो उसे विशेष आकर्षण के तौर पर यहां की नृत्य कला संगीत कला स्थानीय लोक कला आदि में रुचि उत्पन्न करवाने के लिए संजा पर्व जैसे कला संगीत के पर्व विशेष आकर्षण पैदा करने में सक्षम हो सकता है।

संजा पर्व में ग्रामीण समुदाय की बालिकाओं द्वारा संजा की आकृति गोबर से बनाई जाती है तथा आकृति को सजाने के लिए विभिन्न फुल पत्तियों का प्रयोग भी किया जाता है। गोबर से लिपि दीवार पर प्रतिदिन नई–नई आकृति बनाई जाती है। सूर्यास्त से पहले आकृति पूर्ण कर ली जाती है। यहा एक बात विशिष्ट है कि संजा की उपासना का प्रत्येक विधान गीत के साथ पूर्ण होता है। यह आयोजन हर दिन की नई आकृति के साथ पूरे 16 दिनों तक चलता रहता है।[4] सर्वपितृ अमावस्या के दिन संजा को दीवार से निकालकर बांस की टोकरी में रख किसी नदि या तालाब में विसर्जित कर दिया जाता है।

संजा पर्व से पर्यटको के समक्ष ग्रामीण संस्कृति की एक अनूठी छवि प्रस्तुत होती है जिसके माध्यम से वह गोबर से बनी विभिन्न कलात्मक कलाकृतियों के दर्शन करते हैं। साथ ही इस अवसर पर गाए संजा गीत उमंग का भी एक नया संसार रचते हैं। जो पर्यटकों को एक अलग ही अहसास करवाता है। इस पर्व से जुड़ी विभिन्न कहानियों को जानकर भी पर्यटक ग्रामीण संस्कृति में अधिक रूचि लेने लगते हैं। मान्यताओं की बात करें तो संजा पर्व क्यों मनाया जाता है इसका कोई ठोस लिखित प्रमाण नहीं मिलता है, फिर भी एक कथा के अनुसार संजा एक अमीर बाप की बेटी रहती है, जो ससुराल में सामंजस्य नहीं बैठा पाती है जिससे उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अंततः वह कठिनाइयों से निजात पाने के लिए आत्मदाह कर लेती है। और दूसरे दिन संध्या की आकृति दीवार में अंकित दिखाई देती है, तभी से संजा को देवी का स्वरूप मानकर उनकी पूजा की जाती है। किंतु सबसे प्रचलित कथा के अनुसार पार्वती जी ने शिवजी को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए खेल –खेल में इस व्रत को प्रतिष्ठित किया था उन्हीं के अनुकरण पर बालिकाएं सुयोग्य वर प्राप्ति के लिए इस व्रत को करती है।[5]

इस तरह संजा पर्व अपनी चित्रांकन, गीत, पर्व आदि की मोहक अभिव्यक्तियों को समेटे हुए हैं। परंतु नगरीय जीवन के बदलते मूल्यों के दौर में मालवा की यह लोक–कला डगमगाती जा रही है किंतु इनका संवर्धन करके उनको बचाया जा सकता है।

मांडने :– संजा की भांति मांडने भी मालवा की चित्रांकन कला है। मालवा में घर आंगन को सजाने की परंपरा अति प्राचीन काल से विद्यमान रही है। घर के आंगन को सजाने में इन रेखाओं को भूमि पर विभिन्न आकार देकर अलंकरण का रूप दिया जाता है जिसे मांडना कहते है।[6] मांडने की अनोखी रचनाएं लाल पीले नीले सफेद रंगों से बनाई जाती है ऐसी मान्यता है कि मांडने सजे घर आंगन में लक्ष्मी जी का निवास रहता है यह मांडने माता बहने बहुएं परंपरा से बनाती चली आ रही है इनका घर ही उनकी परंपरागत कला पाठशाला होती है।[7] माडने बनाने के लिए पहले आंगन को लीपा जाता है और फिर उस पर खड़िया मिट्टी गेरू आदि से विभिन्न प्रकार के ज्यामितीय आकृतियों को फूल पत्ती आदि बनाकर चित्रित किया जाता है मांडने को विभिन्न आकृतियां बनाकर मोहक रंगों से भर कर ग्रामीण नारियां उसमें अपने कला एवं सौंदर्य बोध को अभिव्यक्त कर देती है।[8]

मालवा के ग्रामीण अंचलों में माडने से घर आंगन को सजाना जीवन में अनिवार्य रूप से शामिल हो गया है। मांडने बनाने के लिए सबसे पहले घर की सुहागिनी द्वारा गेरू या खड़िया मिट्टी से आंगन लिप कर मुहूर्त किया जाता है। मालवा निमाड़ में कपड़े या रुई के फाहे या कूची से खड़िया या गैरों में डुबोकर अनामिका अंगुली से तूलिका का काम लिया जाता है। बारिक डिजाइन बनाने के लिए बालों के गुच्छे को उपयोग में लाया जाता है परंतु बालों से मांडने बनाने की कला में विशेष सावधानी,अनुभव और दक्षता की आवश्यकता रहती है।[9]

मांडने वैसे तो लगभग पूरे साल भर ही बनाए जाते हैं परंतु कुछ त्योहारों पर इन्हें घर को विशेष रूप से सुसज्जित करने के लिए बनाया जाता है। दिवाली पर माडने में लक्ष्मी के पगलिया (चरण चिन्ह) तथा गाय का बाड़ा आदि बनाए जाते हैं। राखी के त्यौहार पर पलाश की लकड़ी पर कोयले से चित्र बनाए जाते हैं तथा नाग पंचमी पर कोयले से नाग महाराज को बनाया जाता है।[10] इसके अलावा मकर संक्रांति होली आदि अवसरों पर माडने बनाए जाते हैं वास्तव में माडने में मानवीय भाव के अनुसार सामाजिक आर्थिक जीवन मूल्यों का समावेश होता गया। मांडने की आकृतियां हर पर्व पर विभिन्नता लिए होती है मांडने की रेखाएं मोटी पतली और आकार अनघड़ जैसी प्रतीत होती है, परंतु ऐसी अनगढ़ता में भी सुंदरता है, जो लोक रसीको को बरबस अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है।

निष्कर्ष

इन बहुविध मांडने से पूरा मालवा समाज कला संपन्न है। ऐसी रचनाओं से जीवन को रस मिलता है, जो कि उत्साह लाता है। ग्रामीण पर्यटन के विकास में यह स्थानीय लोक कला संजा तथा माडने उन कला मर्मज्ञ का ध्यान बरबस ही अपने ओर आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकती है क्योंकि कला का स्थानीय व अनगढ़ रूप आज फिर से अपनी प्राचीनता के कारण कला बाजार की मांग बनता जा रहा है।, जो कि ग्रामीण पर्यटन को नई ऊंचाइयां देने में बहुत कामयाब साबित हो सकता है जरूरत है सिर्फ उचित ध्यानाकर्षण व संवर्धन की है।

संदर्भ सूची

1. ऑटेडिया, संजय, मालवी संस्कृति में संजा पर्व, चौमासा अंक 94 मार्च–जून, 2014, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद भोपाल, पृ.135 ।
2. श्री,रामलाल,भारतीय लोक–संस्कृति की आध्यात्म भूमि, सम्मेलन पत्रिका, लोक–संस्कृति अंक,पृ.66
3. राजपुरोहित, डॉ भगवती लाल, मध्यप्रदेश के मालवा जनपद की चित्रकला चित्रावन, पृ.171।
4. दुबे, अंजना, मालवी पर्व संजा उद्धृत चौमासा, अंक 94 जून 2014, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, पृष्ठ 138 –139।
5. निरगुने, बसंत, लोक–संस्कृति, पंचम संस्करण, 2012,मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी रविंद्र ठाकुर मार्ग बाणगंगा भोपाल पृष्ठ. 130।
6. राजपुरोहित, डॉ भगवतीलाल, मध्य प्रदेश में मालवा जनपद की चित्रकला चित्रावन, आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद भोपाल प्रथम संस्करण सन 2008, पृ.98।
7. वट, आर. सी. प्रेमी, लोक–कला में माडने, उद्धृत शोध समवेत, अंक 1 अक्टूबर दिसंबर 2013, संपादक डॉ श्यामसुंदर निगम, श्री कावेरी शोध संस्थान 34 केशव नगर गोघाट उज्जैन मध्य प्रदेश पृ.संख्या 72।
8. वर्मा, डॉ सुरेंद्र, भारतीय कला एवं संस्कृति के प्रतीक, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल मध्य प्रदेश ,रविंद्र नाथ ठाकुर मार्ग बानगंगा द्वितीय संस्करण, 2011 पृष्ठ संख्या 74, 75।
9. भावसार डॉ लक्ष्मी नारायन, मालवा की चित्रावन विधा,पृ.159।
10. वरे, डॉ एस.एल.म.प्र. का इतिहास एवं संस्कृति,कैलास पुस्तक सदन भोपाल, पृ. 282।